छत्तीसगढ़ का स्वतंत्रता आंदोलन 'कंडेल नहर सत्याग्रह' एवं गाँधी जी का छत्तीसगढ़ प्रवास (1920)–

20 दिसंबर 1920 को राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी रायपुर एवं 21 दिसंबर 1920 धमतरी क्षेत्र आये, ब्रिटिष षासन के द्वारा गाँधीवादी विचारधारा का विरोध सर्वप्रथम हुआ। "ब्रिटिष षासन के द्वारा जो नहर कर लगाये गये थे उसके विरोध में सत्याग्रह के माध्यम से पं. सुन्दरलाल षर्मा, छोटेलाल श्रीवास्तव, नारायणराव मेघावाले जी के कुषल मार्ग–दर्षन में सफलतापूर्वक विरोध प्रदर्षित किया गया। कंडेल नहर सत्याग्रह दूसरे बारदोली आंदोलन के नाम से भी जाना जाता है, इस आंदोलन में गाँधी जी को धमतरी आने का निमंत्रण पं. सुन्दरलाल षर्मा ने दिया था। मोहम्मद षौकत अली भी गाँधी जी के साथ आये थे।"[70] गाँधीजी के छत्तीसगढ़ प्रवास के संबंध में कवि षंकरलाल सेन ने 'छत्तीसगढ़ी आल्हा सुराज' में निम्न पंक्तियों का वर्णन किया है–

"लिखे लड़ाई धमतरी राज के, जतका मोला सुरता आय।

धमतरिहा मन बड़ चटपटिहा, सन् 20 में गाँधी ला लाय।

गाँधी के संग सौकत भैया, मोहम्मद अली विराजिन आय।।

भासण काए मंतर फुँक दिन, धमतरी ल चेला लेइन बनाय।

बड़े–बड़े नेता सब आइन, जनता दरस करे हरसाय।

डटे रहिन सुराज लए बर, कभु धमतरी नई पछुवाए।"[1]

कवि कुंज बिहारी चौबे अपनी कविता में अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ में अपनी उद्भावनाओं को इस प्रकार से व्यक्त किया है–

"कोटवार हर आके हाँका देथे–चल रे सरकारी बिगारी,
जरजाय ऐसन सरकार भैया जरजाय ऐसन बेगारी,
हमर दुख–पीरा के तोला रे अँगरेज थोको नइए चिन्हारी,
ढकर–ढकर पसियाच ल पीथन खा खा के कोटवार के गारी
अउर धरा रपटा उठ के थाना जाथन हम झकमारी ।
सम के थिरा के पीयन नइ दिए पसिया–पेज तें हमलागे।
ठग डारे अँग्रेज तैं हम ला,
लुट डारे अँग्रेज तैं हम ला।"[2]

असहयोग आन्दोलन के सिलसिले में सन् 1922 में पं. सुंदरलाल को एक वर्ष के लिए जेल की सजा हुई थी, यहीं से वे 'कृष्ण जन्म पत्रिका' हस्तलिखित निकालते थे। इसी समय कांग्रेस के कुछ नेता एवं गाँधी जी 'कौंसिल प्रवेष' का विरोध कर रहे थे। पं. सुंदरलाल षर्मा भी इसके विरोधी थे–

"देख देख खुष हो रहे ,कौंसिल का प्रस्ताव।
प्लीडर लीडर लोग जो, दे मूँछों पर ताव।
मजा–मजा है यार, उड़ेंग गुलछर्रे।।
जेल–जाल का डर नहीं, चमकेगा रूजगार।
कूद–नाच नेता बड़े, बनने से दरकार ।
भला हो दास द्व करोड़ बरस जीवै।।"[3]

- **महात्मा गाँधी का अछूतोद्धार आंदोलन (1925–26)**

दिसंबर 1924 में बेलगाँव में कांग्रेस का अधिवेषन हुआ। अधिवेषन में गाँधी जी ने अहिंसा का

मार्ग अपनाने व रचनात्मक कार्यों पर जोर दिया। महंत लक्ष्मीनारायण दास, नत्थूजी जगतार, पं. सुन्दरलाल षर्मा आदि अधिवेषन में षामिल हुए थे। अधिवेषन के पष्चात गाँधी जी हिन्दु मुस्लिम एकता, अछूतोद्धार, खादी का प्रचार, सन् 1925 में वाइकोम गाँव के महादेव मंदिर में हरिजनों का प्रवेष आदि कार्य किये। जिसका प्रभाव पं. सुन्दरलाल षर्मा पर पड़ा। 8 नवम्बर 1925 को अछूतोद्धार हेतु राजिम में हिन्दू सभा का आयोजन हुआ, जिसमें धर्म गुरूओं, समाज सुधारकों एवं छत्तीसगढ़ के देष–भक्तों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया तथा इस ऐतिहासिक सभा का अंतिम निर्णय यह था कि राजीव लोचन मंदिर में अस्पृष्य जातियों को प्रवेष व षास्त्रोक्त प्रमुख था।" नवम्बर 1925 को पं. सुन्दरलाल षर्मा के नेतृत्व में बंदुकधारी पुलिस एवं सनातनी हिन्दुओं में टकराव की स्थिति को देखते हुए भी रामचंद्र मंदिर में प्रवेष कराया गया। जिसका प्रभाव समुचे छत्तीसगढ़ अंचल पर पड़ा। "पं. सुन्दरलाल षर्मा धमतरी रायपुर के आसपास के गाँव में जाकर अस्पृष्यता को दूर करने का कार्य किये एवं अस्पृष्य जातियों को षराब न पीने, स्वच्छता से रहने व जनेऊ धारण करने के लिए प्रेरित किया। उनके कार्यों में नारायणराव मेघावाले, ठाकुर प्यारेलाल सिंह, घनष्याम सिंह गुप्त, वामनराव लाखे आदि षामिल थे एवं इनके सहयोग से रायपुर में "सतनामी आश्रम" की स्थापना की गई।"[4]

- **छत्तीसगढ़ में सविनय अवज्ञा आंदोलन**

इस आंदोलन को सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में सभाओं, जुलूसों एवं संदेषों के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाया गया। रायपुर में इस आंदोलन का श्रीगणेष नमक बनाकर पं. रविषंकर षुक्ल के द्वारा किया गया। विदेषी वस्तुओं का बहिष्कार एवं मादक द्रव्यों के खिलाफ धरणा प्रदर्षन किया गया। महंत लक्ष्मीनारायण दास, ठाकुर प्यारेलाल सिंह आदि ने बड़ी सक्रियता से आंदोलन में भाग लिया।

महाकौषल राजनैतिक परिषद् का सम्मेलन 13 अप्रैल 1930 ई. में होना था एवं उद्घाटन पं. नेहरू के द्वारा किया जाना था, लेकिन इसी बीच उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, परिणामस्वरूप यह उद्घाटन 15 अप्रैल को सेठ गोविंद दास जी के द्वारा किया गया। उक्त समिति के अध्यक्ष पं. सुन्दरलाल षर्मा को, पं. रविषंकर षुक्ल को बालाघाट से गिरफ्तार कर लिया गया। "धमतरी जिले के गट्टासिल्ली गाँव के पषुओं को वनभूमि में चरने के आरोप में कांजी हाउस में बंद कर दिया गया। जिन्हें छुड़वाने के सभी प्रयास विफल रहे फलतः जगतपाल एवं नारायणराव मेघावाले ने सत्याग्रह आरंभ कर दिया।"[5]

- **रूद्री का जंगल सत्याग्रह–**

सत्याग्रहियों ने 22 अगस्त सन् 1930 ई. को नवागाँव के वन विभाग के घास को काटकर सरकारी कानून को तोड़ने का निष्चय किया था। इस सत्याग्रह का नेतृत्व नारायणराव मेघावाले और नत्थूराव जगताप कर रहे थे और सम्पूर्ण रूद्री क्षेत्र में धारा 144 लगा दी गई और सत्याग्राहियों को गिरफ्तार कर लिया गया। इसी तारतम्य में 16 सितम्बर को जनता के द्वारा धारा 144 का उल्लंघन किया गया और पुलिस ने बल प्रयोग कर आंदोलन को दबाने का प्रयास किया लेकिन आंदोलन तब तक जारी रहा जब तक कि गाँधी–इरविन समझौता न हो गया। कवि षंकरलाल सेन ने सन् 1930 में छत्तीसगढ़ की जनता में उत्साह जगाने हेतु आल्हातर्ज में निम्नलिखित पंक्तियाँ लिखी थी–

"जंगल कानून टोरे खातिर, घर कुरिया देइन भुलाय।
पोलिस पकड़ हवालात में लाने, बेंत जेल में जाके खाय।।
लाखों भीड़ कछेरी आगू, मार खाय नेता मुस्काय।
साँय–साँय जब बेंत उड़े त, तरूवा में गुस्सा चढ़

जाय।।"[6]

- **गाँधी जी का द्वितीय छत्तीसगढ़ प्रवास –**

गाँधी जी अपने द्वितीय प्रवास (22–26 नवम्बर सन् 1933) में छत्तीसगढ़ आये और रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, धमतरी, भाटापारा आदि स्थानों की यात्रा की। पं. सुन्दरलाल षर्मा जी द्वारा चलाये जा रहे हरिजनोद्धार कार्यक्रम की प्रषंसा किये और उन्हें अपना गुरू कहा। गाँधी जी के द्वितीय आगमन पर कवि ने लिखा है–

"सन् उन्नीस सौ तैंतीस में धमतरी ऐखे बर बापु जी आय।
सबो राज के जनता उमड़िन, तिल भर जगा न खाली जाय।।
जुलुस सभा झंडा तोरन सब गली–गली, घर–घर फहराय।
का हिन्दु का मुसलमान, एक बरोबर हाथ बढ़ाय।।
गाँधी जी सब डहर किंजर के हरिजन पारा में बिलमाय।
फूलमाला के लेखा नइए, कौन कहाँ उन ला पहिराय।।"[7]

छत्तीसगढ़ की जनता को स्वराज प्राप्त करने के लिए आह्वान करते हुए कवि गिरवर वैष्णव लिखते हैं कि–

"अपन देस अपन हाथ मा, जब तक ले तुम नइ किरहौ।
फेंटिया के सुराज लेए बर, जब तक ले तुम नइ लरिहौ।।
कायर डरपोक नालायक, पाजी नामर्द बने रहिहौ।
तब तक सुराज ला नइ पावव,
सिर पटक–पटक के मर जैहव।।"[8]

20वीं सदी के समाप्ति के साथ ही महात्मा गाँधी युग पुरूष बन गए थे एवं कई कवियों व लेखकों ने उन्हें देवता या भगवान मानना प्रारंभ कर दिया था। जैसे– छत्तीसगढ़ के यषस्वी कवि पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी जी की पंक्तियाँ उद्धृत है–

"देवता बनके आए गाँधी, देवता बनो आए।
अड़बड़ अटपट काम करे तैं, घर–घर अलख जगाए।।
राम, कृष्ण अवतार ला जानिन, रावण कंस ला मारिन
हमर देस ला राक्षस मन सो लड़–लड़ दूनो उबारिन।।
चक्र सुदर्षन धनुष बान का रहिन दूनों झन धारे।
ते हर सोझे मुह मा कहिके अँगरेज ला टारे।।
सटका धरे पटकू पहिरे, चर्चिल ला चमकाए।"[9]

गॉधी जी का प्रभाव पूरे देष के जन–मन में था एवं विष्व के प्रसिद्व व्यक्तियों व विद्वानों ने गॉधी जी के कार्यों व जीवन को अदभूत स्वीकर किया। गॉधी जी बिना किसी घातक हथियार के अपने नैतिक षक्ति के बल पर अँग्रेजी साम्राज्य से विजय प्राप्त की। उक्त कविता में कवि ने यह बताया है कि भारतीय जन श्री राम और कृष्ण का गौरव गाथा को जानते है, भगवान श्री राम ने रावण का विनाष धनुष–बाण से किया था तथा श्री कृष्ण ने षिषुपाल का वध सुदर्षन चक्र से किया था, गाँधी जी ने भी सत्य, अहिंसा व नैतिक बल के सहारे पूरे देष को स्वतंत्र कराया था। वास्तव में गाँधी जी जब एक लाठी पकड़े, धोती लपेटे आम गरीब भारतीय वेषभूषा में आते थे तो वे देवता तुल्य प्रतीत होते थे। वे चमत्कारिक व्यक्तित्व के धनी थे, उनसे प्रभावित होकर क्रांतिकारी कवि कुंजबिहारी चौबे ने देवता मानकर इस प्रकार वर्णन किया है– "अवतरै धरती में हवैं गाँधी देवता, सत के खातिर ओ दाइ, घर बार

छाँड़िके, गरीब अउ गरूवा के करत हवे सेवा।"[10]

गाँधी जी ने न केवल आजादी को प्राथमिकता दी बल्कि दलितोत्थान, षिक्षा नीति, समाजसेवा, गरीबों की सेवा, अर्थनीति, स्वच्छता आदि को अभियान की तरह चलाया था। उक्त कविता के माध्यम से चौबे जी ने उनके कार्यो का वर्णन किया है।

संदर्भ सूची–

1. सेन, षंकरलाल. *छत्तीसगढ़ में गाँधी.* पृ. 78.
2. चौबे, कुंज बिहारीलाल. *अवषेष.* पृ. 198.
3. केसरवानी, अष्विनी. *छत्तीसगढ़ के साहित्य साधक.* पृ. 79.
4. झा, विभाष कुमार, नैयर, डॉ. सौम्या (2013). *छत्तीसगढ़ समग्र.* छत्तीसगढ़ हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृ. 68.
5. अमरोहित, डॉ. गीतेष कुमार (2021). *छत्तीसगढ़ का इतिहास* (द्वि.सं.). सरस्वती बुक्स भिलाई, नई दिल्ली, पृ. 201.
6. सेन, षंकरलाल. *छत्तीसगढ़ में गाँधी.* पृ. 78.
7. वही, पृ. 80.
8. वैष्णव, गिरवरदास. *छत्तीसगढ़ी सुराज.* पृ. 53.
9. वि.प्र., द्वारिका प्रसाद तिवारी. *धमनी हाट.* पृ. 34.
10. आडिल, डॉ. सत्यभामा, *छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य.* पृ.116.